एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

# सनाय की खेती व इसके औषधीय लाभ

(*दीपक कुमार, आर. एस. बोचल्या, राज सिंह चौधरी, प्रदीप कुमार कुमावत एवं सरदार सिंह ककरालिया)
शेर ए कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू (180009)
*pandeyagronomy@gmail.com

सनाय (कैसिया एंगुस्टिफोलिया) को अरब देशों से भारत में लाया गया था आज कल भारत का सनाय की खेती में विश्व में प्रथम स्थान है। भारत से प्रतिवर्ष ₹30 करोड़ से अधिक सनाय की पत्तियां का निर्यात किया जाता है। यह लेग्यूमिनेसी कुल का पौधा है। जिसका हिंदी में सनाय अंग्रेजी में इंडियन सेना राजस्थानी में सोनामुखी कहते हैं। सनाय का पौधा कांटे रहित व जडी नुमा होता है। जिसकी ऊंचाई 2 से 4 फीट तथा शाखाएं टेडी मेडी होती है। शीतकाल में चमकीले पीले रंग के फूल खिलते हैं। इसकी फली हल्के हरे रंग की होती है व पकने पर गहरे भूरे रंग की हो जाती है। बीज भूरे रंग के होते हैं यह 2 वर्षीय होता है। तथा एक बार लगा देने के उपरांत 3 से 4 वर्ष तक निरंतर फल देता रहता है। सर्वप्रथम इसकी खेती तमिलनाडु से शुरू हुई थी लेकिन अब यह केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान में काफी मात्रा में उगाया जाता है। यह अधिकतर बंजर भूमि में उगाए जा सकने के कारण इस पौधे के लिए न तो ज्यादा पानी की आवश्यकता होती है ना ही ज्यादा खाद की और मैं विशेष देखभाल की जरूरत पड़ती है। एक बार लगा देने के बाद भी 3 से 4 साल तक उपज देने वाले इस पौधे को न कोई पशु जैसे गाय, भैंस आदि खाते हैं इसी प्रकार भारत में विभिन्न भागों में खाली पड़ी बंजर भूमि मैं इसकी खेती करके किसान लाभ कमा सकते हैं।

**जलवायु:** इसकी खेती के लिए शुष्क जलवायु तथा कम वर्षा की आवश्यकता होती है। यह पौधा न्यूनतम 5 डिग्री सेल्सियस तथा अधिकतम 50 डिग्री सेल्सियस तक गर्मी सहन कर सकता है। इसकी खेती के लिए 50 सेंटीमीटर वर्षा काफी रहती है इसकी जड़े जमीन में काफी नीचे तक चली जाती है।

भूमि इसकी खेती के लिए रेतीली से लेकर दोमट मिट्टी अच्छी रहती है। ऐसे स्थानों पर जहां पहले खेती न हुई हो इसकी खेती के लिए काफी उपयुक्त होती हैं अतः ऐसी जमीन जो बंजर है व किसी प्रकार की खेती में होती हो ताकि अन्य जगह जहां कोई फसल लेना मुश्किल होता है। इसकी खेती के लिए वह भूमि उपयुक्त होती है। तथा इसके लिए उचित जल निकास का भी बहुत जरूरी होता है।

**खेत की तैयारी:** बुवाई से पहले दो-तीन बार गहरी जुताई कर के खरपतवार से मुक्त कर लेना चाहिए तथा पाटा लगाकर समतल कर लेना चाहिए। खेत की तैयारी करते समय मिट्टी को बारीक बना लेना चाहिए।

**बुवाई का समय**: इसकी बुआई के लिए जुलाई के अंतिम सप्ताह से लेकर अगस्त के अंतिम सप्ताह तक उपयुक्त होती है। सिंचित क्षेत्रों में इसकी बुवाई मार्च में भी की जा सकती है। मानसून का अंतिम बरसात के बाद इसका बोना ज्यादा लाभदायक होता है।

**बीज की मात्रा** तथा **बुवाई का तरीका:** एक हेक्टर भूमि के लिए लगभग 10 किलोग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई से पहले बीज के जमाव का परीक्षण अवश्य कर लें। मानसून की अंतिम बरसात के तुरंत बाद ट्रैक्टर या हल से बुवाई करें तथा लाइन से लाइन और पौधे से पौधे की दूरी 30 सेंटीमीटर होनी चाहिए। बीज को 1.5-2.0 सेंटीमीटर से ज्यादा गहरा नहीं बोलना चाहिए। प्राय: 10 से 12 दिन में अंकुरण हो जाता है। बुवाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिए। अंकुरण जल्दी करने के लिए बीज को बुवाई से 24 घंटे पहले पानी में भिगोकर 2 घंटे छाया में सुका ले तो अंकुरण जल्दी अच्छा होता है।

**खाद व सिंचाई:** इसकी खेती करने के लिए खाद की आवश्यकता नहीं होती है परंतु अच्छी फसल लेने के लिए 4 से 5 टन साड़ी अच्छी साड़ी गोबर की खाद डालनी चाहिए तथा सिंचाई कम से कम जरूरत पढ़ती है।

**निराई-गुड़ाई** बुवाई के 25 से 30 दिन बाद निराई गुड़ाई अवश्य करें जिससे खरपतवार नष्ट हो जाए तथा पौधे खेत में बड़े हो जाए जिससे खरपतवार कम हो इसलिए वर्ष में दो तीन बार निराई गुड़ाई करनी चाहिए।

**बीमारी तथा रोकथाम:** सनाय की फसल में बीमारी से लड़ने की क्षमता होती है। इस फसल को दीमक, टिड्डी भी कम हानि पहुंचाती है। बरसात के दिनों में कभी-कभी इसकी पत्तियों पर काले धब्बे होते हैं लेकिन फसल को कोई नुकसान नहीं पहुंचाते हैं। धूप निकलने पर यह ठीक हो जाते हैं। कभी-कभी फूल आने पर कीट का प्रकोप होता है इसलिए इसमें नीम की पत्ती, निंबोली का घोल या गोमूत्र आदि को मिश्रण करके छिड़कना चाहिए।

**फसल की कटाई तथा भंडारण:** फसल को कोई विशेष देखभाल की आवश्यकता नहीं होती है। बिजाई के लगभग 90 से 100 दिन बाद पत्तियां काटने योग्य हो जाती है। पौधे को 3 से 4 इंच जमीन के ऊपर से तेज धार वाले हथियार से काटते हैं। काटते समय ध्यान रहे पौधा नहीं उखड़ना चाहिए काटते समय मिट्टी ज्यादा गीली नहीं होनी चाहिए प्रत्येक कटाई 60-70 दिन बाद करते रहना चाहिए। पौधों को काटकर छोटी-छोटी डेरिया बना लेनी चाहिए। कटाई में देरी नहीं करनी चाहिए अन्यथा पुराने पत्ते झड़ने लगते हैं जिससे उपज कम हो जाती है तथा पत्ते की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। पूरे वर्ष में लगभग 4 कटाई कर सकते हैं। सर्दियों में पाला पड़ने पर फसल को नुकसान हो सकता है, अतः पहले कटाई पाला पड़ने से पहले करनी चाहिए। पौधों को छाया में सुखाने के 4 से 5 दिन बाद बड़ी-बड़ी डेरिया बना लेनी चाहिए। इसके बाद इसके बाद पत्तियां वह डंठल अलग कर लेना चाहिए। पत्तों को अच्छी तरह सुखा कर सुरक्षित स्थान पर भंडारित कर देना चाहिए, जहां पर नमी नहीं पहुंचे।

**बीज उत्पादन:** किसानों को स्वयं अपना बीज तैयार कर लेना चाहिए। खेत में अच्छी तरह स्वस्थ पौधों को छोड़ देना चाहिए तथा उन पर फलियां लगने दें जब फलियां भूरे रंग की हो जाए तो उन्हें तोड़कर तीन से चार दिन तक धूप में सुखा लेना चाहिए। सूखने पर बीज एकत्रित करके सुरक्षित स्थान पर भंडारित करें।

**उपज:** सूखी पत्तियों का उत्पादन प्रतिवर्ष 1 से 2 क्विंटल प्रति कटाई प्रति एकड़ होता है तथा 1 से 2 क्विंटल बीज उत्पादन हो जाता है।

**बाजार मूल्य एवं आय**: सूखी पत्तियों का बाजार भाव 25 से ₹30 तथा बीज 50 से ₹70 प्रति किलोग्राम होता है। खेती में 4000 से ₹5000 प्रति एकड़ खर्च हो जाता है अतः सनाय की खेती करने से पहले वर्ष में लगभग ₹10,000 तथा दूसरे वर्ष में लगभग 12,000 से ₹15,000 शुद्ध लाभ होता है। इसलिए यह शुष्क क्षेत्रों में काफी लाभदायक होता है तथा बंजर पड़ी भूमियों में किसान इसकी खेती करके अपनी आय को बढ़ा सकते हैं तथा आज के समय में पानी की भी काफी कमी देखी जा रही है।

**सनाय के औषधीय उपयोग:** सनाय के लैक्सेटिव गुणों के कारण इसे कब्ज के इलाज और आंत से जुड़ी कई और बीमारियों के इलाज में सबसे ज्यादा प्रयोग में लाया जाता है। सनाय के लैक्सेटिव गुण: 2 साल और उससे अधिक उम्र के बच्चों में कब्ज जैसी बीमारी के इलाज के लिए इसे प्रभावी माना गया है।

- सनाय के फायदे लिवर संबंधी बीमारी में : एक प्रजाति कैसिया ओसिडेंटैलिस को लिवर रोग की आयुर्वेदिक दवा के महत्वपूर्ण घटक के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। शराब की लत के कारण होने वाली लिवर सिरोसिस जैसी गंभीर बीमारी के इलाज में भी यह प्रभावी है।
- सनाय के फायदे: संक्रमण दूर करने में एंथ्राक्विनोन, संक्रमणों के इलाज में प्रभावी साबित हो सकता है।
- सनाय के फायदे कैंसर में: कैसिया एंजुस्टिफोलिया में तीन प्रकार के फ्लैवनॉयड्स पाए जो कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोक सकते हैं। फ्लैवनॉयड्स, एंटीऑक्सीडेंट गुणों वाले प्लांट केमिकल होते हैं।
- सनाय के फायदे वजन घटाने में: सनाय की खुराक और इस्तेमाल का तरीका: स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के लिए सनाय की सही खुराक और इस्तेमाल का तरीका क्या होना चाहिए, ये जानने के लिए किसी विशेषज्ञ आयुर्वेदिक चिकित्सक से संपर्क करें।

**सनाय के नुकसान:** अन्य प्रकार के लैक्सेटिव की ही तरह सनाय, विशेषकर इसकी पत्तियों के उपयोग से कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इसके इस्तेमाल से लोगों को दस्त और पेट में ऐंठन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। यह दुष्प्रभाव उन लोगों में अधिक पाया गया, जिन्होंने सनाय की प्रतिदिन बड़ी खुराक का सेवन किया। इसके लंबे समय तक इस्तेमाल और बिना डॉक्टरी सलाह के इस्तेमाल करने की सलाह नहीं दी जाती है।

E-Magazine for Agricultural Articles (www.agriarticles.com)